ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 161-162
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

उत्तर रामचरितम में बिम्ब–विधान

निहारिका चतुर्वेदी
एसोसियेट प्रोफेसर– संस्कृत विभाग, एस0आर0के0 महाविद्यालय, फिरोजाबाद, (उ0प्र0) भारत

Received- 08.05.2019, Revised- 12.05.2019, Accepted - 15.05.2019 E-mail: -aaryvart2013@gmail.com

सारांश : ***प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तर रामचरितम में चित्रित बिन्दु विधान का प्रांसगिक वर्णन किया गया है उत्तर रामचरितम में अमूर्त बिम्ब बहुतायत से प्राप्त होता है। कहीं–कहीं दृश्य बिम्ब के अन्तर्गत श्याम, रक्त, पाण्डु और श्वेत वर्णों की योजना मिलती है। महाकवि भवभूति ने बिम्ब विधान के अन्तर्गत अमूर्त वर्णन, करूणरस का मार्मिक वर्णन किया है।***

कुंजीभूत शब्द– रामचरितम, चित्रित बिन्दु, विधान, प्रांसगिक, वर्णन, अमूर्त बिम्ब, बहुतायत, दृश्य बिम्ब, अन्तर्गत।

ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से ही व्यक्ति जड़–चेतन प्रकृति का साक्षात्कार अनुभव कर पाता है। यह साक्षात्कार या परिचय ही ज्ञानेन्द्रियों के विषय कहलाते हैं। ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से मानस पटल पर जो चित्र अंकित होता है, वही चित्र मानस बिम्ब के नाम से जाना जाता है। इसी मानव–चित्र को कवि 'शब्द–चित्र' के माध्यम से समासहृदय के अंतस्थ पर अंकित करने का कार्य करता है, और यही चित्र 'काव्य–शास्त्र' में 'काव्य–बिम्ब' के नाम से जाना जाता है। इस 'काव्य–बिम्ब' में गुण, अलंकार एवं रसादि प्राणों के संचार का काम करते हैं। काव्य के क्षेत्र में (बिम्ब) शब्द अंग्रेजी के 'इमेज' प्उंहम का पर्याय माना जाता है। काव्य बिम्ब का माध्यम 'शब्द' होता है। बिम्ब चित्रात्मक और मानवीय सम्वेदनाओं से युक्त होता है। 'बिम्ब' रूपकात्मक अर्थात् मूर्त होता है। पाश्चात्य–समीक्षक 'एजरा पाउण्ड' ने बिम्ब को परिभाषित किया है। हिन्दी–समीक्षक डा. नगेन्द्र ने 'बिम्ब–तत्व' के विश्लेषण के लिये 'काव्य–बिम्ब' नामक ग्रन्थ की रचना की । डा. नगेन्द्र बिम्ब सृष्टि के हेतु के रूप में सक्रिय कल्पना को तथा उसके प्रस्तुतीकरण के माध्यम के रूप में शब्दार्थ को महत्व देते हैं, अतः कल्पना की सहायता से शब्दार्थ द्वारा निर्मित ऐसे मानस–चित्र को वे बिम्ब कहते हैं जिसमें भाव–तत्व का सम्मिश्रण होता हो।

संस्कृत–नाटककारों में कालिदास के पश्चात् भवभूति का विशिष्ट स्थान है। 'उत्तर रामचरितम्' में प्रयुक्त 'बिम्ब–सृष्टि' सर्वोत्कृष्ट श्रेणी के अंतर्गत आती है। ऐन्द्रिय बिम्ब के अन्तर्गत दृश्य, श्रव्य, स्पृश्य, घ्रातव्य तथा आस्वाद्य बिम्ब आते हैं। वस्तुपरक–बिम्ब में मानव तथा जड़ प्रकृति से संबंधित बिम्बों का समावेश है। ''उत्तर रामचरितम्' में दृश्य बिम्ब के अन्तर्गत श्याम, रक्त, पाण्डु और श्वेत वर्णों की योजना मिलती है। भवभूति का श्रोत–संवेदन अधिक प्रखर है। युद्ध के प्रसंग में शब्दायमान स्वर्ण घंटियाँ और योद्धाओं के रथों और धनुष का मनोहर वर्णन मिलता है। भवभूति ध्वन्यात्मक चित्र पट के लिये वर्णतन्तुओं के संयोग से पद्धबिम्बों का विन्यास करते हैं वह ध्वनि बिंब के अनुकूल ही होता है। झनझनाहट, गदगद् कण्ठ किसी भी प्रकार का वर्णन हो, भवभूति ने शब्द–विन्यास बिम्ब की आवश्यकतानुसार ही किया है। ध्वनि–बिम्बों को भाँति भवभूति ने त्वाच् बिम्ब का प्रयोग बड़े सटीक ढंग से किया है। चन्द्रकेतु, लव और राम के वर्णनों में भी कवि की स्पर्श इंद्रियों की संवेदनशीलता प्रकट होती है। दोनों कुमार एक–दूसरे को लक्ष्य करके कहते हैं कि चिकने तथा कोमल मनोहर राजकीय वस्त्रों के समान इस शरीर के प्राप्त होने पर आलिंगन की अभिलाषा से मन रोमांचित हो जाता है। भगवान वाल्मीकि के आश्रम के बिम्ब में एक साथ त्वक्, घ्राण और जीभ आदि इंद्रियों का संलिष्ट बिम्ब प्राप्त होता है।

सीता–परित्याग के पश्चात् शम्बूक् वध के प्रसंग में जब राम पुनः पंचवटी पहुँचते हैं, और वनवास के पूर्व परिचित प्रदेशों तथा सीता की प्रिय सखी वासन्ती को देखते है, तो उनका शोकद्विगुणित हो जाता है। यहाँ पर अमूर्त 'शोक' को विषरस, शल्य–शकल आदि से चित्रित किया गया है। अमूर्त–बिम्ब की 'उत्तर रामचरितम्' में बहुतायत से प्राप्त होता है। अमूर्त बिम्ब से तात्पर्य अदृश्य बिम्ब से है। बिम्ब अमूर्त होते हुए भी अगोचर नहीं होता है। उसमें भी अस्पष्ट रूप से व्यंजना की विद्यमानता रहती है। यद्यपि सभी बिम्बों का मानस प्रत्यक्ष होता है, फिर भी किसी ऐन्द्रिय–संवेदन की यतकिंचित् प्रतीति जो दृश्य बिम्बों में पाठकों को होती है, अदृश्य में उसका अभाव रहता है। शुद्ध अदृश्य (अमूर्त) बिम्ब की सृष्टि दूसरे अंक के 2 श्लोक में सफलतापूर्वक की गयी है। सज्जनों का व्यवहार सदा विजयी प्रकृति का होता है। उनकी वाणियाँ विन्रमता और मधुरता के संगम से युक्त होती हैं। भवभूति ने प्रकृति के

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

बाहरी और कठोर वर्णन में स्वभावोक्ति–बिम्बों का प्रयोग बहुतायत से किया गया है। मानव ह्रदय के सूक्ष्म भावों का वर्णन भवभूति ने बहुत किया है। आत्मीय व्यक्ति के सानिध्य के कारण व्यक्ति का चित्र द्रवीभूत हो जाता है भवभूति ने दुःख के वर्णन में भी औचित्य का पूरा–पूरा ध्यान रखा है। स्त्रियोचित कोमलता के कारण माता कौशल्या की पीड़ा प्रवाहित होती है जबकि पुरूषोचित कठोर के कारण राजा जनक का दुख घाव पर पड़े हुए लवण के सृदश्य है। भवभूति के वक्रोक्ति मूलक बिम्बों के आधार प्रमुख रूप से उपमा और उत्प्रेक्षा अलंकार ही है।

भवभूति करूण रस के अंकन में सिद्धहस्त है। दाम्पत्य जीवन में सुख एवं दुख पूर्ण स्थितियों का निर्वहन करते रहने पर प्रेम सदैव एक रस ही बना रहता है –

अद्वैत सुख दुःख योरनुगतं सर्वास्ववस्थासु यद् ।
विश्रामों ह्रदयस्य यत्र जरसा यासिम्न्हार्यो रसः ।।

दाम्पत्य प्रेम का इतना सटीक वर्णन भवभूति के काव्य–बिम्ब की उपलब्धि कही जा सकती है। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि 'सूरदास' ने वात्सल्य प्रेम का अद्भुत वर्णन किया है। इसी वात्सल्य रस की अनुभूति का अंकन भवभूति ने भी कुशलता से किया है।

माता कौशल्या लव की मुखाकृति में सीता की समानता को देखती है। पंचवटी एवं दण्डकारण्य के पूर्व परिचित स्थलों को देखकर के राम सीता की स्मृति में करूणक्रन्दन करते हैं। सीता को अकारण ही निर्वसित करने की वेदना में राम बेसुध होकर के प्रलाप करने लगते हैं। राम को सीता के वियोग में विश्व में शून्यता का बोध होता हैं। राजा जनक भी सीता के निर्वासन से बहुत व्यथित हैं, सीता कैसे इस अपमान के दंश के साथ जीवन–यापन कर रही होंगी, इस कल्पना मात्र से राजा जनक द्रवीभूत हो जाते हैं। हिंसक जीव–जंतुओं के भय से सीता ने अवश्य ही पिता राजा जनक को सहायता हेतु पुकारा होगा। पिता–पुत्री के आंतरिक सम्बन्ध का यह बिम्ब अत्यन्त मर्मस्पर्शी है।

भवभूति ने बिम्ब–विधान के अंतर्गत अमूर्त वर्णन, करूण रस का मार्मिक वर्णन, प्रकृति के कठोर तथा सुकोमल स्वरूपों का वर्णन किया है। अभिधाश्रित संगीत वर्ण–बिम्बों का प्रयोग भी भवभूति का प्रिय विषय है। बिम्बों के अंतर्गत प्रयुक्त क्रियात्मक पद बिम्बों का प्रयोग बहुतायत से मिलता है। दलति, मुंचति, ज्वलयति, कृन्तति बिम्ब–धर्मी क्रियाओं का एक साथ प्रयोग किया जाता है।

ह्रदय–विदारक दृश्यों जैसे प्रकृति की भयावहता, श्मशान आदि के वर्णनों में कठोर पद बिम्बों का प्रयोग किया गया है। सीता की दुर्बलता, राम के करूण–विलाम आदि की वर्णनों में भवभूति के कोमलकान्त पदावली से युक्त बिम्बों का प्रयोग कियागया है। भवभूति के बिम्ब–विधान में गत्यात्मक चित्रों का अभाव है। संवेदना के वर्णनों में भवभूति ने शक्ति ध्वनि और स्पर्श बिम्बों का सफल प्रयोग किया है। अतः हम कह सकते है कि उत्तर रामचरितम् में प्रयुक्त बिम्ब–विधान उच्च कोटि का है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. "An Image is that which resents an intel lectual and emotional complex is an in stant of time", T.S. Eliot - Literary Es says of Ezra. Pound.ed-1954, P-N.4
2. डॉ0 नगेन्द्र काव्य बिम्ब, पृ0सं0–5
स्निग्ध श्यामा : क्वचिदपरतो भीषणा भोगरूक्षाः
उत्तर रामचरितम् 2–14
3. स्वणत्कनककिंकिणी भण भाणायित स्यन्दनैः।।
क्वणत्कनककिंकिणी भणभणायित स्यन्दनैः।
4. यत्प्राप्तौ मम परिरम्भवाभिलाषा दुन्मीलत्पुलककदम्ब मगमास्ते, उ0रा0–5–18।
5. गन्धेन स्फुरता मनागनुस्रतो भक्तस्य सर्षिष्मतः कर्कन्धूफल मिश्रशाकपचनामोदः परिस्तीर्यते।।, उ0रा–4 ।
6. प्रियप्राया वृति र्विनयम धरोवाचि नियमः
प्रकृत्या कल्याणी चरितम् मतिरनंवगीतः परिचयः
7. दृष्टेजने प्रेयसि दुःसहानि स्रोतः 'सहस्रैरिव संप्लवन्ते, उ0रा0 परितम् 4–8।
8. भित्वा भित्वा प्रसरति बलात्कोऽपि चेतोविकारः ।
तोयस्येवाप्रति हतरयः सेतुमोघः ।। उ0राम चरितम् 3–36
9. सा वाणी विनयः स एवं सहजः पुण्यानुभवोऽप्यसौ, हा हा देवी किमुत्य मनः पारिप्लवं धावति।।
उ0 रामचरितम् 4–22
10. नूनं त्वया परिभवं च वनं च घोर तां व्यथा प्रसवकाल् कृतामवाप्य।
11. क्रव्याद्गणेषु परितः परिवारयत्सु संत्रस्तया शरण् मित्यसकृत् स्मृतोऽहम् ।।"
उ0रामचरितम् 4–23।
12. त्प्रहरति विधिर्मर्मच्छेदी न कृन्तति जीवितम्
उ0रामचरितम् 3–31।

*****